KEEP THE TORCH OF DHAMMA A LIGHT

LET IT SHINE BRIGHTLY IN YOUR DAILY LIFE.

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, आषाढ़ पूर्णिमा, 03 जुलाई, 2023, वर्ष 53, अंक 1

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

न तावता धम्मधरो, यावता बहु भासति।
यो च अप्पम्पि सुत्वान, धम्मं कायेन पस्सति।
स वे धम्मधरो होति, यो धम्मं नप्पमज्जति॥

– धम्मपदपालि 259, धम्मट्ठवग्गो.

– बहुत बोलने से (कोई) धर्मधर नहीं हो जाता। जो (कोई) थोड़ी-सी भी (धर्म की बात) सुन कर काया में धर्म का दर्शन करने लगता है (अर्थात, विपश्यना करने लगता है) और जो धर्म (के आचरण) में प्रमाद नहीं करता, वही नि:संदेह 'धर्मधर' होता है।

धर्मचक्र की विशेषताएं

धर्मचक्र प्रवर्तन दिवस पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आषाढ़ पूर्णिमा, 11 जुलाई, 1987, घाटकोपर, बम्बई

इस देश के जिन महापुरुष को सम्यक संबोधि प्राप्त हुई, उन्होंने आज के ही दिन सारनाथ में धर्म का चक्र चलाया, जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहते हैं। तो क्या इसके पहले भारत में धर्म नहीं था? समझना चाहिए कि इस व्यक्ति ने जो धर्मचक्र प्रवर्तन किया उसमें क्या नई बात थी, क्या अनूठी बात थी? सचमुच इसके पूर्व भी भारत में शील-सदाचार का धर्म था ही। सब नहीं तो अनेक लोग शील-सदाचार का जीवन जीते ही थे। समाधि का धर्म भी था ही। आठ तरह की बड़ी गंभीर समाधियां थीं, सब नहीं तो कुछ लोग उनका अभ्यास करते ही थे। प्रज्ञा भी थी ही। इस व्यक्ति ने भी धर्मचक्र चलाते हुए लोगों को शील-सदाचार, समाधि और प्रज्ञा ही सिखाई। प्रश्न उठता है- नई बात क्या सिखाई?

नई बात यह सिखाई कि कोई व्यक्ति शील-सदाचार का पालन केवल इसलिए करता है कि यदि मैंने कोई भी शील तोड़ा तो मुझे राज्य की ओर से दंड मिलेगा। दूसरा भय यह कि शील तोड़ा तो समाज में मेरी निंदा होगी, तीसरा भय यह कि मरने के बाद मेरी दुर्गति होगी, अधोलोक में जन्म मिलेगा। अथवा शील-पालन करूंगा तो राज-दंड से बचूंगा। समाज में मेरी प्रतिष्ठा होगी कि यह व्यक्ति बड़ा शीलवान है, बड़ा धार्मिक है, अच्छा आदमी है। तीसरा- मरने के बाद मेरी सद्गति होगी। जैसे भी हो, शील-पालन करना तो अच्छा ही है। लेकिन जिस दिन ऐसा हो जाय कि मनुष्य अपने स्वभाव से शील-पालन करने लगे। उसे शील-पालन करने में कोई प्रयत्न नहीं करना पड़े, कोई जोर जबरदस्ती नहीं करनी पड़े, उसका स्वभाव हो जाय। जिस दिन यह उसका स्वभाव हो गया उस दिन से उसका धर्म हो गया। धर्मचक्र प्रवर्तन का यही धर्म है। धारण करे तो धर्म- *'धारेतीति धम्मो'*, अब उसे धारण कर लिया। उसका स्वभाव हो गया। धर्म का अर्थ ही स्वभाव है। *'अत्तनो सभावं धारेतीति धम्मो'* (बुद्ध-वन्दना गन्थ-सङ्गहो, *नमक्कार टीका*) धर्म उस व्यक्ति का स्वभाव हो गया।

ऐसी अवस्था कैसे आये? चाहते तो सब हैं, पर कैसे आये? इस महापुरुष ने रास्ता बताया कैसे आये। तो अगला कदम मन को वश में करना सीखें, माने समाधि का कदम। समाधि की क्या नई बात बताई?

पहले किसी एक आलंबन के सहारे साधक चित्त को एकाग्र करने का काम करता था, जिसे उन दिनों की भाषा में वितर्क कहा, और अब उसी का चिंतन चल रहा है, जिसे विचरण कहा। इस प्रकार वितर्क है, विचार है तो भीतर बड़ी प्रीति जागती है। मन को बड़ा अच्छा लगता है। इस प्रीति से सारे शरीर में एक रोमांच होता है, उसे कहा सुख है। वितर्क है, विचार है, प्रीति है, सुख है और चित्त की एकाग्रता है, चित्त अपने आलंबन पर लग गया। यह पहला ध्यान हुआ।

उससे और आगे बढ़ता है, गहराइयों में जाता है तो विचार और वितर्क दोनों रुके, खत्म हुए। अब केवल मन में और शरीर में बड़ी प्रीति है, बड़ा सुख है और चित्त की एकाग्रता है। दूसरा ध्यान हुआ।

और आगे बढ़ते हुए दूसरे ध्यान से तीसरे ध्यान की ओर जाता है तो मन को इतना एकाग्र कर लेता है कि सुख है या दुःख, इसे महत्त्व नहीं देता। लेकिन शरीर में पुलक रोमांच तो हो ही रहा है। मन में जो प्रीति जाग रही थी वह रुकी, अब केवल सुख है और चित्त की एकाग्रता है। तीसरा ध्यान हुआ।

इससे आगे बढ़ा अब इस शरीर में पुलक रोमांच की जो लहरियां चल रही थीं, वे भी रुकीं। अब न विचार है, न वितर्क है, न प्रीति है, न सुख है, केवल चित्त की एकाग्रता है। जो आलंबन लिया उसी में चित्त समाहित हो गया। चौथा ध्यान हुआ।

अब अपने मन को फैलाता है और आगे बढ़ाता है। अपने मानस को कैसे सारे विश्व में, अनंत तक फैला दूं। फिर भीतर जो चित्त का जानने वाला अंग है, उस विज्ञान को, मतलब कॉन्शियसनेस को फैलाने लगता है। सारे विश्व में फैला लिया। दूर-दूर अनंत तक अपने मन को फैलाता है। अनंत विज्ञान हो गया। पांचवां ध्यान हुआ।

रास्ते में कहीं कोई रुकावट नहीं, जहां चाहे बिना किसी बाधा के मन जाता है। सर्वत्र आकाश ही आकाश हो गया। अनंत आकाश का ध्यान हो गया। छठवां ध्यान हो गया।

अब पकड़ने के लिए कोई आलंबन ही नहीं रहा। अकिंचन है, पकड़ने के लिए कुछ नहीं, अनंत अकिंचन में फैल गया। सातवां ध्यान हो गया।

अब देखता है कि मेरी जो संज्ञा है वह काम कर रही है कि नहीं! हां, जरा-जरा-सी तो कर रही है। नहीं, नहीं कर रही है। माने ऐसी अवस्था में पहुँचा जहां संज्ञा काम करती है कि नहीं करती है। उस अवस्था को भी अनंत में फैला लिया- *'नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं'- (विमतिविनोदनी-टीका)*। संज्ञा नहीं है ऐसा भी नहीं कह सकते, और संज्ञा है, ऐसा भी नहीं कह सकते। ऐसे आठवें ध्यान में पहुँच गया।

भारत में और भी बड़े-बड़े ध्यान होते थे, आज तो लुप्त हो गये। अनेक प्रकार के आलंबनों को लेकर अनंत तक फैलाने का अभ्यास होता था। किसी एक 'रंग' का ध्यान करते थे। वही आलंबन है। आंख खोली रंग को देख लिया। बंद आंखों से रंग को देखने की कोशिश की। आंख खोली रंग को देख लिया, आंख बंद की फिर रंग को देखा लिया। इस तरह करते-करते रंग का एक छोटा-सा बिंदु आने लगा। लेश मात्र, एक बिंदु की तरह। अब उसे लगा फैलाने। जो भी रंग पकड़ा, अब उसे फैलाने लगा, अनंत आकाश तक वह रंग फैलने लगा। है तो हमारे मन की कल्पना ही न। लगा फैलाने, फैला लिया अनंत आकाश तक।

इसी तरह से मैत्री की बात भी फैलाने लगा, अच्छी बात है। सबका मंगल हो! सबका भला हो! इसी बात को लेकर फैलाने लगा मन को। अनंत तक फैला लिया। बड़ा लाभ होता था इन आठों ध्यानों को पूर्णरूप से भावित कर लेने पर। एक ओर तो बड़ी शक्तियां प्राप्त होती थीं, बड़ी सिद्धियां प्राप्त होती थीं, अनेक चमत्कारों का काम करके दिखा सकता था। दूसरी ओर मन निर्मल भी होता था। तो फिर कमी क्या थी? ...

(क्रमशः... शेष अगले अंक में)

'धम्मविपुल' विपश्यना केंद्र का उद्घाटन समारोह

नवी मुंबई के बेलापुर में एक नये केंद्र की स्थापना हुई। रविवार 4 मार्च 2012 को पूज्य गुरुजी ने इसका उद्घाटन करते हुए जो धर्म प्रवचन दिया, उसमें निःस्वार्थभाव से सेवा करने और धर्म को आचरण में उतारने की विशेषता है, इसलिए इसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के साथ यहां जोड़ना अधिक उपयुक्त लगा। वैसे भी धर्मचक्र प्रवर्तन लेख बहुत लंबा है जो एकाधिक अंकों में जायेगा। और साथ ही पूज्य गुरुजी के जन्म-शताब्दी वर्ष समारोह का अवसर है तो धर्म धारण करने की ही बात करें।

—संपादक

****

मेरे प्यारे धर्मपुत्रो-धर्मपुत्रियो!

इस नये बन रहे धर्म केंद्र में उपस्थित होकर ध्यान करना कितना मंगलमय है। धर्म का स्थान धर्म की साधना करने से ही मंगलमय होता है। अच्छा आरंभ किया, इतने साधक-साधिकाओं ने एकत्र होकर साधना से काम शुरू किया। अन्य केंद्रों की तरह यह केंद्र भी खूब तपेगा, खूब लोक कल्याण करेगा। आवश्यक है कि व्यक्ति-व्यक्ति में धर्म जागे, व्यक्ति-व्यक्ति धर्म में पुष्ट हो। ऐसे जो भी केंद्र बन रहे हैं उनमें लोग तपने आयेंगे। यह केवल कर्मकांड नहीं है कि ऐसी तपोभूमि में जाकर हमने 10 दिन बिता दिये और हम बड़े धार्मिक हो गये। धर्म की अपनी मर्यादा है, जिसका पालन करना है और वह यही कि धर्म जीवन में उतरे। जो व्यक्ति अपना ही भला नहीं कर सका, अपना ही मंगल नहीं साध सका, वह औरों का मंगल क्या साधेगा? इसलिए किसी पर एहसान करने के लिए नहीं, किसी पर कृपा करने के लिए नहीं, बल्कि हर व्यक्ति को अपने भले के लिए, अपने कल्याण के लिए धर्म में खूब पकना चाहिए। धर्म में पक कर जब अपना भला होने लगेगा, तभी औरों का भला हो सकेगा। एक व्यक्ति स्वयं तो तपे नहीं, स्वयं तो पके नहीं, और उम्मीद यह करे कि सारी दुनिया विपश्यना करने लगेगी। अरे देखो! हमारी विपश्यना कितनी फैल रही है! ऐसा नहीं, हर आदमी यह सोचे कि मेरे भीतर धर्म कितना फैल रहा है। यदि मेरे भीतर फैल रहा है तो बाहर फैलना आसान हो जायेगा।

ऐसा न हो कि 10, 20, 50 या 100 वर्ष के बाद यह एक इमारत बन कर रह जाय। लोग कहें कि हां, यहां कोई तपस्या हुआ करती थी। यहां कोई एक केंद्र था और उस केंद्र के अमुक-अमुक आचार्य थे। ऐसा गलत इतिहास न बने। धर्म फैले और धर्म तब फैलेगा जब व्यक्ति-व्यक्ति में धर्म जागेगा। यह अपने भीतर धर्म जगाने का स्थान है, धर्म में पकने का स्थान है। अपने कल्याण के लिए, अपने भले के लिए और इस प्रकार औरों के कल्याण के लिए, औरों के भले के लिए—हर व्यक्ति की यही कामना होनी चाहिए।

धर्म के रास्ते चलते हुए यदि किसी व्यक्ति के मन में रंच मात्र भी यह भाव आये कि यह केंद्र मैंने बनाया, इस पर मेरा प्रभुत्व होना ही चाहिए। इसको बनाने में मैंने कितना सहयोग दिया है। अरे! गुरुजी तो बूढ़े हुए जा रहे हैं, अब यह केंद्र मेरे हाथ में रहे, तो समझो, बेचारे को धर्म समझ में ही नहीं आया। केंद्र धर्म के हाथ में रहे, महत्त्व धर्म का है। जहां पद, प्रतिष्ठा, महत्ता आदि का गौरव होने लगा, वहां धर्म डूबने लगा। स्थान-स्थान पर, समय-समय पर जो धर्म के बड़े काम हुए, इतिहास कहता है कि वहां-वहां पर अगर पतन हुआ तो क्यों हुआ? एक आदमी, दो आदमी, दस आदमी—ये मेरे हाथ में आ जायें, मैं इनका मालिक बन जाऊं, तो समझ लो ये धर्म के दुश्मन हैं। नहीं, जैसे और लोग तप रहे हैं वैसे मैं भी तपूं, मुझे देखकर और लोग भी तपें, तपने की ही बात, प्राप्ति की बात नहीं। इसकी वजह से मुझे क्या मिले, तो धर्म डूब गया।

कोई व्यक्ति सेवा करता है, कोई दान देता है, कोई धर्म सिखाता है और बदले में कुछ चाहता है तो निकम्मा आदमी है। बदले में यही चाहे कि लोक कल्याण हो रहा है कि नहीं, बस! प्रसन्नता इसी बात में हो कि लोक कल्याण हो रहा है। यह सारा कुछ बहुत बढ़िया है, लेकिन इसमें मेरा क्या स्थान है? जिसके मन में यह भाव आता है वह इस धर्म-स्थान के लायक नहीं। स्थान क्या होगा, सेवा करनी है न, हम सेवा करने वाले हैं। यदि हमारे मन में यह भाव आये कि हमारी मिल्कियत हो, हमारा प्रभुत्व हो, तो इसी में डूब कर रह जाओगे। सेवा करनी भूल जाओगे।

मैं जानता हूं विश्व में जो इतनी बड़ी संख्या में साधक हैं, कितनी लगन से काम कर रहे हैं। कितनी लगन से धर्म फैला रहे हैं। कैसे फैला रहे हैं? धर्म अपने जीवन में उतारते हुए फैला रहे हैं। लोग देखते हैं, अरे! यह कल तक कैसा था, अब देखो विपश्यना से कैसे बदल गया। कैसे बदल गया? तो उसे देख करके लोग विपश्यना की ओर आते हैं, धर्म की ओर आते हैं। कोई संप्रदाय बांधने के लिए नहीं, कोई पॉलिटिकल पार्टी खड़ी करने के लिए नहीं, कोई अपना प्रभुत्व जमाने के लिए नहीं। लोग आते हैं, उनका कल्याण होता है, यही देख कर मन प्रसन्न हो। इसके अतिरिक्त और कोई बात हो तो समझो उस आदमी में धर्म का नामोनिशान नहीं है। हमें तपना है, अपने भले के लिए।

हर व्यक्ति के मानस में कोई न कोई खोट होता ही है। नहीं होता हो तो अर्हन्त हो गये, बुद्ध हो गये। मेरे भीतर भी खोट है, इसे निकालना है और निकालने के लिए यह विद्या मिली है, तो बस एक ही लक्ष्य हो कि उसे निकालना है। जहां कहीं भी स्वार्थ की भावना है, अहंकार की भावना है, मैं-मैं की भावना है वह खतरनाक है, धर्म से बहुत दूर है।

इसलिए हर आदमी सोचे, समझे, एक ऐसा आदर्श जीवन जीये, जिसे देख कर लोग खिंचे हुए चले आयें, आ ही रहे हैं। इसी तरह से तो धर्म फैल रहा है, पर हर व्यक्ति को सोचना चाहिए कि इस फैलाव में कहीं मैं बाधक तो नहीं बन गया। अपने भीतर जो अहं है उसको निकालने का लक्ष्य होगा तो कभी बाधक नहीं बनेगा। तो जो-जो आए हैं, इतने दिनों से साधना कर रहे हैं और खूब समझ भी रहे हैं, उन्हें बार-बार प्रेरणा देता हूं कि अपने आप को सुधारने का काम प्रमुख होगा तो दूसरों को लाभ अपने आप मिलने लगेगा।

इतने लोग जो सुधर रहे हैं उनको देख करके मेरा मन भी प्रसन्न होता है। कल तक कैसा था? अरे! आज इतना बदल गया, इतना अच्छा हो गया, तो केवल इसी का भला नहीं हुआ, इसकी वजह से कितनों का भला हो गया। लोग भी देखते हैं कि यह व्यक्ति इतना गुस्सैल था, अब तो बड़े प्यार से बात करता है। इसमें गुस्सा नहीं है। इतना अहंकारी था, अब तो इसमें अहंकार नहीं है। यह सद्गुण देख करके लोग खिंचे हुए चले आयेंगे। इस धर्म स्थान पर जो साधना कर रहे हो, इसका लाभ यहां भी मिले और अपने जीवन में भी मिले। एक ही लक्ष्य हो, "एकहि साधे सब सधे"। जिसने एक को साध लिया कि "मुझे अपने आप को सुधारना है। मुझमें जो थोड़ा-सा भी खोट है उसे दूर करना है"। यह लक्ष्य होगा तो धर्म खूब फैलेगा, खूब लोक कल्याण होगा। धर्म में प्राप्ति नहीं, केवल देना होता है। मैं क्या दे सकता हूं! मैं क्या दे सकती हूं!

जो मेरे धर्मपुत्र हैं, मेरी धर्मपुत्रियां हैं—यह परिवार खूब बढ़े! इसी तरह धर्म का पूरा परिवार खूब बढ़े, खूब बढ़े! बड़े परिवार को देख करके परिवार के नायक के मन में खुशी होती है न, तो ऐसी ही खुशी हमें भी होती है। जब सुनता हूं कि दुनिया में यहां-यहां केवल सेंटर ही नहीं बन गए बल्कि लोग प्रतिदिन साधना करते हैं। हो सकता है उनमें से कुछ ऐसे भी हों जो धर्म को बराबर समझें नहीं और अपने अहंकार के लिए दान कर रहे हैं। यहां दान देने से मुझे कुछ प्राप्त हो जायेगा। मेरा प्रभुत्व रहेगा। ऐसे निकम्मे लोग थोड़े-से होते हैं। लेकिन अधिकांश तो अपने आप को सुधारने के लिए ही आते हैं और सुधारते हैं, इसी से धर्म फैल रहा है। एक बार फिर सबको यही प्रेरणा देता हूं कि तपस्या करते हुए एक ही लक्ष्य हो—मुझमें जो भी खोट है वह निकले। और वह अपने आप निकलेगी। इसके लिए हमें कुछ करने की जरूरत नहीं। साधना इसी प्रकार की है कि भीतर जो मैल होगा वह टिकेगा नहीं। जैसे-जैसे साधना में पुष्ट होते जाओगे तो मैल अपने आप बाहर निकलेगा। इस संवेदना से निकलेगा कि उस संवेदना से निकलेगा, कष्ट दे करके निकलेगा या बिना कष्ट दिये निकलेगा, पर निकलेगा अवश्य। लक्ष्य एक ही हो कि मुझे अपने आप को सुधारना है। मैं जैसा भी हूं, जैसी भी हूं, उससे और अच्छा बनूं, और अच्छी बनूं। यह लक्ष्य सामने होगा तो ही इस केंद्र के उद्घाटन की सफलता होगी। दुनिया में जो भी केंद्र बन रहे हैं सबका एक ही लक्ष्य, कैसे अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो। वे किसी संप्रदाय में नहीं बंध जायँ। किसी भी संप्रदाय का व्यक्ति हो, किसी जाति, वर्ण, गोत्र का व्यक्ति हो- मनुष्य है न, बस पर्याप्त है। मनुष्य है तो इस रास्ते चलकर अपना कल्याण कर ही लेगा। उसको अपना नाम या जाति बदलने की जरूरत नहीं। उसका जो भी संप्रदाय हो, अपना मनुष्यत्व जगाना है। बस! इसी लक्ष्य से काम करो, कर ही रहे हो, और अधिक करो। मेरा मंगल आशीष है, मेरी मंगल कामना है। खूब मंगल हो! खूब मंगल हो!

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

ooooooooooooooooooooo

मंगल मृत्यु

नागपुर के विपश्यना आचार्य श्री सुधीर शाह ने 81 वर्ष की उम्र में विगत 14 मई को बंगलुरु में बहुत शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। उन्होंने अपना पहला शिविर 1972 में अपने माता-पिता के साथ किया था और दूसरे वर्ष उनकी धर्मपत्नी माधुरी बहन के साथ पुनः बैठे तो दोनों ही धर्म सेवा में लग गये। 1993 में वे स.आ. बने और 2001 में पूर्ण आचार्य। तत्पश्चात मध्यवर्ती महाराष्ट्र के वे दोनों समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य बन कर बहुत काम किया और धर्म प्रसार को आगे बढ़ाया। उन्होंने तथा उनके पुत्र-पौत्रों सहित उनके पूरे परिवार ने धर्म की बहुत बड़ी सेवा की और आज भी कर ही रहे हैं। उनकी माताजी श्रीमती केशरबेन ने भी सहायक आचार्य बन कर बहुत दिनों तक धर्म सेवा की थी। श्री सुधीर भाई अपने शांत स्वभाव और दयालुता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। ऐसे सेवाभावी के पुण्य-बल से उनका तथा उनके पूरे परिवार का मंगल हो और धर्म पथ पर आगे बढ़ते हुए निर्वाण लाभी हों, धम्म परिवार की यही मंगल कामना है।

ooooooooooooooooooooo

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. श्री उत्तमराव पाटील, धुळे
2. श्री गुलाबराव माळी. धुळे
3. श्री अनिल माळी, जळगाव
4. श्री दीपक मुचरीकर, भुसावळ, जळगाव.

वरिष्ठ स. आचार्य

1. श्रीमती रश्मि विपिनप्रकाश मंगल, अहमदाबाद (गुजरात)

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री योगेन्द्र यादव, बलिया, उत्तर प्रदेश
2. श्रीमती पुष्पलता गायकवाड, नागपुर
3. श्रीमती अल्पा लखानी, जेतपुर, गुजरात

---0---

बालशिविर शिक्षक

1. श्रीमती शर्मिला गुप्ता, बैंगलोर
2. Miss Xiu Hu Li, Fujian, China
3. Mrs. Xiao Wen Li, Guangdong, China

क्षेत्रीय संयोजक बाल-शिविर

1. श्रीमती एन. विजयलक्ष्मी, तमिलनाडु क्षेत्र

****

विपश्यना विशोधन विन्यास

प्रिय धम्म परिवार, गुरु पूर्णिमा के इस अवसर पर विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रोजेक्ट "पाल"- धम्म का खजाना, की घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि इस अनमोल धम्म को आचार्यों की शुद्ध परंपरा द्वारा सँभाल कर रखा गया और पूज्य एस.एन.गोयन्काजी द्वारा इसकी प्राचीन शुद्धता के साथ हमें दिया गया, जिसे अनेकों के लाभ के लिए संभाल कर सुरक्षित रखने की और भविष्य की पीढ़ियों को इसी शुद्ध रूप में प्रदान करने की आवश्यकता है। म्यंमा से लाए हुए ताड़-पत्र और हस्तलिपियां, दुर्लभ पुस्तकें, तसवीरें, कलाकृतियां, ऑडियो और वीडियो टेप के रूप में दुर्लभ सामग्री का विशाल खजाना उपलब्ध है। इसमें गोयन्काजी के दुर्लभतम व्यक्तिगत संग्रह भी शामिल हैं। **"पाल" - धम्म के खजाने का विवरणः**

- तसवीरें, छवियां और ऋणात्मक (नेगेटिव्स) क्रमशः – 20,000 और 8,000 से अधिक
- पत्र, दस्तावेज़ और प्रतिलेख - 2,10,000 से अधिक।
- समाचार पत्र, मासिक पत्रिकाएं – 10,000 से अधिक।
- डायरी और नोटबुक्स - लगभग 500 • मुद्रित पुस्तकें – 12,000 से अधिक
- ताड़-पत्र और हस्तलिपियां - लगभग 28 • ऑडियो और वीडियो टेप संग्रह– 3, 000 से अधिक
- पेंटिंग्स – बुद्ध के जीवन पर 130 से अधिक बड़े चित्र संभाल कर रखें हैं।
- शिविर आवेदन फॉर्म – 12 लाख से अधिक (कुछ फॉर्म 1971 के हैं!)

इन सामग्रियों को पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण होने वाले नुकसान के जोखिम से बचाने के लिए, परियोजना 'पाल' – जिसका अर्थ है धम्म शिक्षाओं को सुरक्षित रखना, संभाल कर रखना, तदर्थ एक अत्याधुनिक संरक्षण सुविधा की योजना बनाई गई है, जो लगभग 5,000 वर्ग फुट (Sq ft) क्षेत्र में होगी। इसमें तापमान नियंत्रित वातावरण के साथ आग-प्रतिरोधी स्टोर की सुविधा होगी। ऊपरी मंजिल (सतह) पर होने के कारण यह पानी से भी सुरक्षित रहेगी।

इस परियोजना पर लगभग 300 लाख रुपये खर्च होने का अनुमान है। आने वाली पीढ़ियों के हितार्थ इस पुण्यदायी काम के लिए आपका कोई भी योगदान महत्त्वपूर्ण होगा।

कृपया प्रोजेक्ट 'पाल' - 'धम्म का खजाना' की एक लघु वीडियो देखने के लिए निम्न YouTube लिंक पर क्लिक करें: https://youtu.be/eK-dJPWnOhs

कोई भी हमारी वेबसाइट, मोबाइल ऐप, स्कैन, यूपीआई, क्यूआर कोड, नेट बैंकिंग द्वारा ऑनलाइन दान कर सकता है अथवा हमारे पते पर चेक भेज सकता है।
दान-विकल्पों के लिए लिंक: https://www.vridhamma.org/Donation-to-VRI
VRI को दान करने पर भारतीय नागरिक 100% आयकर कटौती के लाभार्थी होते हैं।

सबका मंगल हो।

विपश्यना विशोधन विन्यास को दान के लिए बैंक विवरण इस प्रकार हैः—
विपश्यना विशोधन विन्यास, ऐक्सिस बैंक लि., मालाड (प.)
खाता क्र. 911010004132846; IFSC Code: UTIB0000062
संपर्क- 1. श्री डेरिक पेगाडो - 022-50427512/ 28451204
2. श्री बिपिन मेहता - 022-50427510/ 9920052156
3. ईमेल - audits@globalpagoda.org
4. वेबसाइट- https://www.vridhamma.org/donate-online

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

1. रविवार 27 अगस्त 2023, शताब्दी वर्ष महा शिविर
2. रविवार 10 सितम्बर 2023, शताब्दी वर्ष महा शिविर
3. रविवार 1 अक्टूबर 2023, शरद पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
4. रविवार 19 नवंबर 2023 शताब्दी वर्ष महा शिविर
5. रविवार 10 दिसम्बर 2023, शताब्दी वर्ष महा शिविर
6. रविवार 14 जनवरी 2024, संघ दान और महा शिविर
7. रविवार 04 फरवरी, मेगा इवेंट-**'डॉक्यूमेंट्री फिल्म' का विमोचन और अन्य कार्यक्रम**

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिन

Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; **Email: guruji.centenary@globalpagoda.org**

दोहे धर्म के

प्रतिक्षण सति जाग्रत रहे, प्रतिपल संप्रज्ञान।
प्रतिपल भव के मल कटें, प्रतिपल हो कल्याण॥

मानव जीवन रतन सा, जाय वृथा न बीत।
चलें मुक्ति के पंथ पर, रहे धरम से प्रीत॥

केवल बुद्धिकिलोल में, जीवन बीत न जाय।
जगे आचरण धरम का, तो मंगल छा जाय॥

जैसा तेरा आचरण, फल वैसा ही होय।
दुराचरण दुख ही बढ़े, सदाचरण सुख होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सदाचार धारण करै, जद मन बस मँह होय।
ज्यूं प्रग्या मँह स्थित हुवै, जीवन मुक्ती होय॥

सदाचार अनुभव करै, अनुभव करै समाधि।
जद प्रग्या अनुभव करै, छूटै भव भय ब्याधि॥

बिना स्वयं अनुभव कर्यां, करै बात ही बात।
संप्रदाय छायो रवै, उगै न धरम प्रभात॥

धारण कर्यां हि धरम है, अनुभव कर्यां हि ग्यान।
कोरी-मोरी मान्यता, करै नहीं कल्याण॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, आषाढ़ पूर्णिमा, 03 जुलाई, 2023

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 15 JUNE, 2023, DATE OF PUBLICATION: 03 JULY, 2023

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076,
244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

Sukhā saṅghassa sāmaggī,
samaggānaṃ tapo sukho
Happy is the unity of the Saṅgha &
Happy are those who meditate together

Centenary Celebrations of Birth Year of Pujya Guruji S.N. Goenka
Schedule of Mega Courses at GLOBAL VIPASSANA PAGODA, Gorai, Mumbai

Month	Proposed Mega Course, Date & Day	Occasion
August 2023	27th Aug 2023, Sunday	Centenary year Mega course
September 2023	10th Sept 2023, Sunday	Centenary year Mega course
October 2023	1st Oct 2023, Sunday	Sharad Purnima (Pujya Guruji)
November 2023	19th Nov 2023 Sunday	Centenary year Mega course
December 2023	10th Dec 2023, Sunday	Centenary year Mega course
January 2024	14th Jan 2024, Sunday	Sangha dana and Mega Course
February 2024	**MEGA EVENT** 4th Feb 2024, Sunday	**Documentary Film on Pujya Guruji & other events**

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का के जन्म शताब्दी समारोह के दौरान
विश्व विपश्यना पगोडा के महा शिविर कार्यक्रमों की सूची

माह	प्रस्तावित महा शिविर तिथियां	अवसर
अगस्त 2023	27 अगस्त 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
सितम्बर 2023	10 सितम्बर 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
अक्टूबर 2023	1 अक्टूबर 2023, रविवार	शरद पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
नवंबर 2023	19 नवंबर 2023 रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
दिसम्बर 2023	10 दिसम्बर 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
जनवरी 2024	14 जनवरी 2024, रविवार	संघ दान और महा शिविर
फरवरी 2024	**समापन समारोह :** 4 फरवरी 2024, रविवार	**'डॉक्यूमेंट्री फिल्म' का विमोचन और अन्य कार्यक्रम**

Registration link:- oneday.globalpagoda.org
For any other information- Tel :- 022-50427500 / +91 8291894644
• Email: guruji.centenary@globalpagoda.org

N.B. The QR code on top right corner contains informations regarding Centenary Program.

oooooooooooooooooooo

सच्ची श्रद्धांजलि

इस शताब्दी समारोह के दौरान सभी लोग अधिक से अधिक साधना एवं अपने-अपने क्षेत्रों में सामूहिक साधना करते हुए धर्म को जीवन/आचरण में उतारने का संकल्प लें तो ही पूज्य गुरुजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
तभी उनके प्रवचनों एवं अन्य निर्देशों के प्रति सही सम्मान होगा।